Date :- 15/5/2020	Degree Part-I (Hons.)
Content Writer :-	Paper - I
Dr. Akhay Kumar Pathak	Content of Paper :-
Deptt. of Economics,	Micro Economics
Marwari College,	Module :- 2
Darbhanga (LNMU)	

TOPIC :- UTILITY ANALYSIS
(उपयोगिता विश्लेषण)

Scanned with CamScanner

अर्थशास्त्र के क्षेत्र में मांग का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि अर्थशास्त्र की विचारधारा के शुरुआत के साथ ही मांग को नियम एक मूलभूत सिद्धान्त के रूप में समझने में स्थापित हो गया। मांग के सिद्धान्त की व्याख्या उपयोगिता या तुष्टिगुण विश्लेषण के रूप में की जा सकती है। उपयोगिता या तुष्टिगुण विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि किस प्रकार व्यक्ति अपने साधनों से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करके संतुष्टि के स्तर को अधिकतम करता है। प्रत्येक व्यक्ति के सामने यह समस्या रहती है कि वह किस प्रकार अपनी सीमित आय को व्यय करे ताकि उसे अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो सके। इस हेतु वह वस्तुओं एवं सेवाओं के उन संयोगों का चयन करता है, जिससे उसे अधिकतम कुल उपयोगिता प्राप्त होती है। उपयोगिता विश्लेषण के संदर्भ में मुख्य रूप से दो विचारधाराओं का अध्ययन किया जाता है। प्रथम गणनावाचक उपयोगिता विश्लेषण एवं दूसरा क्रमवाचक दृष्टिकोण या तटस्थता वक्र विश्लेषण है।

3

Date ___/___/______ Page No.: ______

उपयोगिता का अर्थ एवं परिभाषा :-

सामान्यतया वस्तु का उपयोगी होना उसका तुष्टिगुण कहलाता है परन्तु अर्थशास्त्र की भाषा में किसी भी वस्तु का वह गुण जिसके द्वारा वस्तु मनुष्य की किसी न किसी आवश्यकता की पूर्ति करती है तुष्टिगुण कहलाता है अर्थात् वस्तु के उस गुण को तुष्टिगुण या उपयोगिता कहते हैं जिससे मनुष्य के आवश्यकता की सन्तुष्टि होती है उपयोगिता को परिभाषित करते हुए प्रो० जेवन्स ने कहा है कि "तुष्टिगुण या उपयोगिता से हमारा अभिप्राय किसी वस्तु के उस अमूर्त गुण से है जिसके द्वारा हमारे उद्देश्यों की पूर्ति होती है" दूसरी तरफ प्रो० श्रीमति रॉबिन्सन ने इसे विश्लेषण करते हुए कहा है कि "तुष्टिगुण या उपयोगिता वस्तुओं का वह गुण है जिसके फलस्वरूप लोग उसे खरीदना चाहते हैं"।

तुष्टिगुण या उपयोगिता की विशेषताएं।

(1) तुष्टिगुण मानव की आवश्यकता एवं तीव्रता पर निर्भर करता है

(2) तुष्टिगुण का भौतिक रूप नहीं होता।

Maharaza

Date ___/___/______ Page No.: ______

(3) तुष्टिगुण सापेक्षिक होता है।
(4) तुष्टिगुण एवं संतुष्टि दोनों का समान अर्थ नहीं होता है।
(5) तुष्टिगुण मापा जा सकता है।
(6) तुष्टिगुण नैतिक मूल्यों से प्रभावित नहीं होता है।

उपयोगिता या तुष्टिगुण के भेद

आर्थिक विश्लेषण के क्षेत्र में उपयोगिता अथवा तुष्टिगुण को निम्नांकित दो भागों में बाँटा जाता है। प्रथम सीमान्त उपयोगिता एवं दूसरा कुल उपयोगिता। इनका अध्ययन निम्नांकित तरीके से किया जा सकता है:-

(1) सीमान्त उपयोगिता अथवा तुष्टिगुण (Marginal utility) :- उपभोग की अंतिम इकाई को सीमान्त इकाई कहा जाता है एवं इस अंतिम इकाई से प्राप्त उपयोगिता को सीमान्त उपयोगिता कहा जाता है। प्रो० के० ई० बोल्डिंग ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है कि " किसी वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई प्रयोग करने से तुष्टिगुण में जो वृद्धि होती

Date __/__/__ Page No.

है, उसे सीमान्त उपयोगिता कहते हैं।"

सीमान्त उपयोगिता के विभिन्न रूप (Different forms of Marginal Utility) :—

सीमान्त उपयोगिता को निम्नांकित तीन रूपों में अध्ययन किया जा सकता है:

(a) धनात्मक सीमान्त उपयोगिता (Positive Marginal Utility) — जब तक किसी वस्तु के उपभोग से, धनात्मक रूप से संतुष्टि मिलती रहती है, तो उसे धनात्मक सीमान्त उपयोगिता कहते हैं।

(b) शून्य सीमान्त उपयोगिता (Zero Marginal Utility) — जब वस्तु के उपभोग से न तो संतुष्टि प्राप्त होती है और न ही असंतुष्टि, तो ऐसी स्थिति को शून्य सीमान्त उपयोगिता की स्थिति कहते हैं।

(c) ऋणात्मक सीमान्त उपयोगिता (Negative Marginal Utility) — जब किसी वस्तु के उपभोग से संतुष्टि के बजाय असंतुष्टि प्राप्त होती उसे ऋणात्मक सीमान्त उपयोगिता कहते हैं।

Scanned with CamScanner